स्वास उस्वास पवन कूँ पलटै नागफनी कूँ भूच* है ।
सुरत निरत का बाँध बेड़ा गगन मँडल कूँ कूँच है॥२८॥
सुनले जोग बिजोग हंसा सब्द महल कूँ सिध करो ।
गहु गुरज्ञान बिज्ञान बानी जीवतही जग मैं मरो ॥२९॥
उजल हिरंबर सेत भौंरा अछै बृछ सत बाग है ।
जीते काल बिसाल सोहं तरतीजन बैराग है ॥ ३० ॥
मनसा नारी कर पनिहारी खाकी† मन जहँ मालिया ।
कुंभक काया बाग लगाया फूले फूल बिसालिया ॥ ३१ ॥
कच्छ मच्छ कुरम धौलं सेस सहस-फन गावहीं ।
नारद मुनि से रटैं निस दिन ब्रह्मा पार न पावहीं ॥ ३२ ॥
सँभु जोग बिजोग साधा अचल अडिग समाध है ।
अवगत की गत नाहिं जानी लीला अगम अगाध है॥३३॥
सनकादिक औ सिध चौरासी ध्यान धरत हैं तासु का ।
चौबीसो अवतार जपत हैं परमहंस प्रकास का ॥३४॥
सहस अठासी औ तैंतीसो सूरज चंद चिराग है ।
धर‡ अंबर§ धरनीधर‖ रटते अवगत अचल बिहाग है ३५
सुर नर मुनिजन सिध अरु साधक पारब्रह्म कूँ रटत हैं ।
घर घर मंगलचार चौरी ज्ञान जोग जहँ बटत हैं ॥ ३६ ॥
चित्रगुप्त धरमराय गावै आदि माया ओंकार है ।
कोट सरसुती लाप करत हैं ऐसा ब्रह्म दरबार है॥३७॥
कामधेनु कलपबृछ जाके इन्द्र अनंत सुर भरत है ।
पारबती कर जोर लछमी सावित्री सोभा करत है॥३८॥

*भौंवना । †पिंडी । ‡धरनी । §आकाश । ‖शेषनाग ।

गंधर्व ज्ञानी अरु मुनि ध्यानी पाँचो तत्त खवास है।
त्रिगुन तीन बहुरंग बाजी कोइ जन बिरले दास है॥३९॥
ध्रू प्रहलाद अगाध स्वर्ग है जनक बिदेही जोर है।
चले बिमान निदान* बीता धर्मराय की बँध तोर है॥४०॥
गोरखदत्त जुगादि जोगी नाम जलंधर लीजिये।
भरथरी गोपीचन्द सीझे ऐसी दिच्छा दीजिये॥४१॥
सुलतानी बाजीद फरीदा पीपा परचे पाइया।
देवल फेरा गोप गुसाँई नामा† की छान छवाइया॥४२॥
छान छवाई गऊ जिवाई गनिका चढ़ी‡ बिवान में।
सदना|| बकरे कूं मत मारै पहुंचे आन निदान में॥४३॥
अजामेल से अधम उधारे पतित-पावन बिरद§ तासु है।
केसो आन भया बनजारा पट दल कीन्ही हाँस है॥४४॥
धना|| भक्त का खेत निपाया माधो¶ दई सिकलात¶ है
पंडा पाव** बुझाया सतगुरु जगन्नाथ की बात है॥४५॥
गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु अचल दिगंबर††थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये अवगत सत्त कबीर है॥४६॥

*आदि कर्म्म। †देखो नोट पृष्ठ ८४। ‡देखो नोट पृष्ठ २६। §बिरद=कीर्ति ||देखो नोटपृष्ठ ३४। ¶सकलात -पीताम्बर माधवदास जगन्नाथजी के एक प्रेमी पुजारी थे जिनको कोई कढ़ी बीमारी हो गई थी। और पुजारी लोग उनको समुद्र किनारे बैठा आये। रात को जब माधव-दासजी को जाड़ा लगा तो जगन्नाथजी अपना पीताम्बर उनको ओढ़ा आये और आरोग कर दिया। सबेरे पीताम्बर मुर्ति पर न पाकर उस की खोज पड़ी तो पुजारियों ने उसे माधवदास के तन पर पाकर उन की महिमा जानी और आदर से मंदिर में लाये।

**पाव आग देखो नोट पृष्ठ ८६।

†† बिना बस्त्र।

नानक दादू अगम अगाधू तिरी जहाज खेवट सही ।
सुख सागर के हंसा आये भक्ति हिरंबर उर धरी ॥४७॥
कोटि भानु प्रकास पूरन रोम रोम की लार है ।
अचल अभंगी है सतसंगी अवगत का दीदार है॥४८॥
धन सतगुरु उपदेस देवा चौरासी भ्रम मेटहीं ।
तेज पुंज तन दँह धरके इस बिध हम कूँ भेंटहीं॥४९॥
सब्द निवास अकास बानी यह सतगुरु का रूप है ।
चंद सूर न पवन पानी जहाँ छाँह न धूप है ॥५०॥
रहता रमता राम साहब अवगत अलह अलेख है ।
भूले पंथ बिडंब* बानी कुल का खाविंद† एक है॥ ५१ ॥
रोम रोम मेँ जाप जप ले अष्ट कमल दल मेल है ।
सुरत निरत को कमल पठवो जहँ दीपक बिन तेल है॥५२॥
हर दम खोज हनोज‡ हाजिर तिरबेनी के तीर है ।
दास गरीब तबीब§ सतगुरु बन्दीछोड़ कबीर है ॥५३॥

# सुलच्छन कुलच्छन

उत्तम कुल करतार दे द्वादस भूषन संग ।
रूप द्रब्य दे दया कर ज्ञान भजन सतसंग ॥ १ ॥
सील सँतोष बिबेक दे छिमा दया इकतार ।
भाव भक्ति बैराग दे नाम निरालंब सार ॥ २ ॥
जोग जुगत जगदीस दे सूछम ध्यान दयाल ।
अकल अकीन अजनम जत अठसिध नौनिध ख्याल३

*पाखंड । †स्वामी । ‡सदा । §वैद्य ।

सुरग नरक बाँचे नहीं मोछ बंध से दूर ।
बड़ी गरीबी जगत में संत चरन रज धूर ॥ ४ ॥
जीवत मुकता सो कहो आसा तृस्ना खंड ।
मन के जीते जीत है क्यूँ भरमे ब्रह्मंड ॥ ५ ॥
साला* करम सरीर में सतगुरु दिया लखाय ।
गरीबदास गलतान† पद नहिं आवै नहिं जाय॥६॥
चौरासी की चाल क्या मो सेती सुन लेह ।
चोरी जारी करत है जाके मुखड़े खेह ॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ लट छुटी रहै विकराल ।
क्रोध कसाई उर बसै कुसब्द छुरा घर घाल ॥ ८ ॥
हरष सोग है स्वान गत संसा सरप सरीर ।
राग दोष बड़ रोग है जम के परे जँजीर ॥ ९ ॥
आसा तृस्ना नदी में डूबे तीनो लोक ।
मनसा माया बिस्तरी आतम आतम दोष ॥१०॥
एक सत्रु इक मित्र है भूल परी रे प्रान ।
जम की नगरी जाहिगा सब्द हमारा मान ॥११॥
निंदा बिंदा‡ छाँड दे संतौं सूँ कर प्रीत ।
भवसागर तिर जात है जीवत मुक्त अतीत ॥१२॥
जो तेरे उपजै नहीं तो सब्द साख सुन लेह ।
साछीभूत सँगीत है जा सूँ लावो नेह ॥ १३ ॥

*घर, स्थान । †मदहोश, मस्त । ‡बुरा भला कहना ।

स्वर्ग सात असमान पर भटकत है मन मूढ़ ।
खालिक तो खोया नहीं इसी महल में ढूँढ़ ॥१४॥
करम भरम भारी लगै संसा सूल बबूल ।
डाली पातों डोलते परसत नाहीं मूल ॥ १५ ॥
स्वाँसाही में सार पद पद में स्वाँसा सार ।
दम देही का खोज कर आवागमन निवार ॥१६॥
बिन सतगुरु पावै नहीं खालिक खोज बिचार ।
चौरासी जग जात है चीन्हत नाहीं सार॥ १७ ॥
मरद गरद में मिल गये रावन से रनधीर ।
कंस केस चानूर से हिरनाकुस बलबीर ॥ १८ ॥
तेरी क्या बुनियाद है जीव जनम धर लेत ।
गरीबदास हरि नाम बिन खाली परसी[*] खेत॥ १९॥

## ॥ सवैया ॥

बाजीद[†] दुनी[‡] सेती बिचरा,
कादिर कुरबान सँभाला है ।
फँद टूट गया तब ऊँट[§] मुआ,
तहँ पकर पलान[||] उतारा है ॥ १ ॥
अरवाह[¶] चली कहु कौन गली,
धौरा[**] पीरा अक[††] कारा है ।

[*]पड़ा । [†]दादू दयाल के एक चेले का नाम । [‡]दुनिया । [§]मन ।
[||]ऊँट की काठी । [¶]सुरत । [**]सपेद । [††]या ।

कहिं पैर पियादा पालकियाँ,
कहिँ हस्ती* का असवारा है ॥ २ ॥
सत खुद्द खुदाय अलह लखिया,
सब झूठा सकल पसारा है ।
कपड़े फाड़े तन से डारे
अब सत्त प्रनाम हमारा है ॥ ३ ॥
बीबी रोवैँ चोली धोवैँ,
तू सुन भरतार हमारा है ।
मैँ ना मानूँ मस्तान भया,
लागा निज निकट निवारा है ॥ ४ ॥
उर मैँ अबिनासी आप अलह,
सतगुरु कूँ पार उतारा है ।
कहँ गल कंटक दुनिया दूती,
येहू बन कैसा गारा† है ॥ ५ ॥
हम जान लिया जगदीस गुरू,
जिन जंतर‡ महल सँवारा है ।
कुछ तौल न मोल नहीँ जा का,
देखा नहिं हलका भारा है ॥ ६ ॥

*हाथी । †घना । ‡कलों का ।

कुछ रूप न रेख विवेक लखा,
चाखा नहिं मीठा खारा है ।
गलतान[*] समान समाय रहा,
जो पिंड ब्रह्मंड से न्यारा है ॥ ७ ॥
सुर संख समाधि लगाय रहे,
देखा इक अजब हजारा[†] है ।
कहै दास गरीब अजब दरिया,
झिल मिल झिल वार न पारा है ॥ ८ ॥

( २ )

सुख सागर न्हान चलो हंसा[‡],
भवसागर भूल रहे लोई ।
कुल काट[§] लगा जम आन ठगा,
अगली पिछली सबहीं खोई ॥ १ ॥
निंदक नेमी नर ताय लिये,
कुछ समझैं हैं नांहिं गुरु-द्रोही ।
संतौं का दोष धरैं दिल मैं,
अघ पाप के बीज बहुत बोई ॥ २ ॥
सुसरे सालौं हितकार करैं,
सासू साली कोई नंदोई ।
जग लड़े मरैं परतीत नहीं,
बोलैं नहिं साँच जगत धोई ॥ ३ ॥
लबरे भड़ुए नहिं भेद लहैं,
गुझ[¶] बीरज मंत्र कूं हम गोई ।

---

[*] मस्त, मदहोश। [†] सहसदलकमल। [‡] जीव। [§] मैल, दाग़। फ़रेबी। [¶] गुप्त

साधू माखन मध छाक रहे,
जग पीवत है पिछली छोई* ॥ ४ ॥
दिन आवत है सुनि दंग भया
जम तलब छुटी तब दे रोई ।
कहै दास गरीब जगाय रहे,
भडुए निस बासर रहैं सोई ॥ ५ ॥

( ३ )

तप राज लिया बड़ जुलम किया,
आगम अंधरो नहिं सूझत है ।
घट में सत सालिग्राम सही,
चेतन होकर जड़ पूजत है ॥ १ ॥
पाती तोरै नहिं मुख मोरै,
पाहन पानी सूं लूझत† है ।
अंधे बहिरे गूंगे गहले‡,
नहिं सब्द अनाहद बूझत है ॥ २ ॥
काम धेनु सदा कलप वृच्छ कला,
जहँ अमी महारस दूझत§ है ।
कहै दास गरीब गगन गादी,
गैबी गलताना गूँजत है ॥ ३ ॥

( ४ )

झलकै निज नूर जहूर सदा,
त्रिभै|| निरधार अपार कला ।

*छाछ । †उलझता है । ‡बेसमझ । §दुहा है । ||फैल रही है ।

कादिर कुरबान अमान सही,
रहता रमता है अलख अलाह ॥ १ ॥
सरबंग अभंग अनाहद है,
जल थल पूरन है सुन्न सिला।
दरवेस दयाल निहाल करै,
करनी भरनी डूबै न जला* । २ ॥
घट देँह सनेह नहीं जाके,
सरवन चसमैं नहिं कंठ गला।
कुछ रूप न रंग अभंग बिधा,
सोवै न जगै बैठा न खला† ॥ ३ ॥
करले दीदार जुहार‡ सही,
तेरा जुगन जुगन होय जात भला।
कहै दास गरीब अलख लखिये,
कोइ दरगह मैं पकरे न पला§ ॥ ४ ॥

( ५ )

निरबान निरंजन चीन्ह भइया,
दुख दारिद मोछ करै करता।
गरभ बास मिटै निज नाम रटे,
क्यूँ जुगन जुगन चोले धरता ॥ १ ॥
चल थोर करो अवगत नगरी,
तू लख चौरासी क्यूँ फिरता।
सत संगत ले निज साधन की,
नहिं नाम बिना कारज सरता ॥ २ ॥

*जल में। †खड़ा। ‡प्रणाम। §पल्ला, दामन।

दयावंत विबेकि भये ज्ञाना,
टुक छेड़ करे से सब लड़ता ।
चुंडित* मुंडित* सब पकर लिये,
इनसे जम किंकर† ना डरता ॥ ३ ॥
तू कौन कहाँ से आन फंदा,
देख आग बिरानी क्यूँ जरता ।
समझै नहिं सीख सुदरगह‡ ले,
बड़े भून भये जो पिंड भरता ॥ ४ ॥
मुकता होने का भेद कहूं,
चल चौंर सोहंगम जिन ढुरता ।
कहै दास गरीब निवास सदा,
जहं नाद अखंड अजब घुरता ॥५॥

( ६ )

झलकै जोती मुकता मोती,
निरभै निरबानी भैंटा है ।
त्रिकुटी ताना भर नाम नली§
एकै लख पूरन पेटा|| है ॥ १ ॥
इक बिंद पिछान जहान रचा
कोइ बाप कहै कोइ बेटा है ।
कोइ पीतसरे¶ कोइ पाति** लगा
कोइ ससुर भया समधेटा†† है ॥ २ ॥

*जटा धारी और मूड़ मुड़ाये हुए भेष । †दूत, नौकर । ‡अच्छी दरगाह को पकड़ । §बुनने की नली जिस पर सूत भरा होता है । ||ताज़ा तैयार हुआ कपड़ा । ¶चचिया ससुर । **पति । ††समधी ।

जद काल महा बली पकड़ लिया,
मरघट में आकर लेटा है।
साऊ* सबही खप्पर फेरैं,
सिर फोर दिया पुत जेठा† है।
गत बूझत है जद फूंक दिया,
खर खोज नहीं सब मेटा है ॥ ३ ॥
कहै दास गरीब उपाध लगी,
सब भूत भये जग हेठा है ॥ ४ ॥

( ७ )

मग‡ पूछत है परलीन नहीं,
नादो§ बादी झगड़ा ठानैं।
मुकता रुकता नहिं राह लहैं,
नहिं साध असाध कूं जानत हैं ॥ १ ॥
देवल जाहीं मसजिद माहीं,
साहब का सिरजा भानत हैं¶।
पंडित काजी डोबी** बाजी,
नहिं नीर खीर†† कूं छानत हैं ॥ २ ॥
चेतन का गल काटत हैं,
धर पत्थर पाहन मानत हैं।
कहै दास गरीब निरास चले,
धिरकार जनम नर लानत है ॥ ३ ॥

*साथी। †बड़ा बेटा। ‡राह। §भेष। ‖पंडित। ¶मालिक के पैदा किये हुए जीवों की हिंसा करते हैं। **डुबा दी। ††दूध।

( ८ )

दुख दुंद उपाध में जीव बँधे,
समरथ की नहीं उपासा* है ।
नेमी धर्मी धर्म धाम फिरैं,
साध संगत कूँ हासा† है ॥ १ ॥
बघनी ठगनी कूँ लूट लिये,
चीन्हा नहिं निरगुन रासा है ।
जल अरघ दिया जम आन लिया,
न्हाते जल बारह मासा है ॥ २ ॥
सूझै नहिं सिंध अबंध बिद्या,
पाती तोरैं नर घासा है ।
जम मारत है मुगदर मोढ़े‡,
चसमों मैं देत धवाँसा है ॥ ३ ॥
चंचल चोर कठोर कुटिल,
क्या पहिरत मलमल खासा है ।
जम नगन करै साहब की सौं,
देगा तुझ बहुत तिरासा है ॥ ४ ॥
दिल खोज भइया निज नाम जपो,
सत पूरन ब्रह्म खुलासा है ।
कहै दास गरीब पत्थर पटको,
तुम डारो निरगुन पासा है ॥ ५ ॥

*उपाशना । †हँसते हैं । ‡कंधा ।

( ९ )

जुलमी जुलमाना छाँड़ भइया,
गल काटत है बदला लीजै ।
खिचड़ी खाना तज हलवाना*,
सुरापान† पराधी‡ क्यूँ कीजै ॥ १ ॥
रहै कोट बरस सँग साधौं के,
जल में पाहन का क्या भीजै ।
चंदन बन में रँग लावत है,
इक बाँस चिटंबी§ ना सीझै ॥ २ ॥
बहिरे आगे पद छंद कहा,
समझै नहिं मूढ़ कहा रीझै ।
कहै दास गरीब कुटिल काजी,
चल ज्वाब सरे‖ में क्या दीजै ॥ ३ ॥

(१०)

पापी परभात¶ नहीं भेंटै,
मुख देखत पाप लगै जा का ।
जननी नौ मास तिरास दई,
धिरकार जनम तिसकी मा का ॥ १ ॥
चौरासी कुंड पड़ै पापी,
है जुगन जुगन कुंभी पाका ।
गर्भ छेदन बेधन पीर लगै,
मिटता नाहीं इच्छा टाँका ॥ २ ॥

*बकरी का बच्चा । †शराब खोरी । ‡अपराध । §गठीला । ‖शरा यानी हज़रत मुहम्मद की नसीहतों की किताब । ¶तड़के ।

जिस सेरी* साधू संत गये,
वह मारग कठिन बहुत बाँका ।
कहै दास गरीब धर बूझ भइया,
भया तीन लोक सावँत साका† ॥ ३ ॥

## रेखता

(१)

अजब महरम मिला ज्ञान अगह‡ खुला,
परख परतीत सूँ दुंद भागा ।
सब्द की संध में फंद मनुवाँ गया,
बिरह घनघोर में हंस जागा ॥ १ ॥
अष्ट दल कमल मध जाप अजपा चलै,
मूल कूँ बंध बैराट छाया ।
तिरकुटी तीर बहु नीर नदियाँ बहैं,
सिंध सरवर भरे हंस न्हाय ॥ २ ॥
खेचरी भूचरी चाचरी उनमुनी,
अकल अगोचरी नाद हेरा ।
सुन्न सतलोक कूँ गमन हंसा किया,
अगमपुर धाम महबूब मेरा ॥ ३ ॥
अछर की डोर घनघोर में मिल गई,
भेद भेदा मैं करतार महली ।
दास गरीब यह विषम§ बैराग है,
समझ देखो नहीं बात सहली‖ ॥ ४ ॥

---

*तग रास्ता । †किसी शूर बीर की कीर्त्ति का नया सम्वत् । ‡दुर्लभ । §कठिन । ‖सहज ।

( २ )

बिरह की पीर जिस गात गूदा नहीं,
बीझ पिंजर गया अस्थि सूखा* ।
उनमुनी रेख† धुन ध्यान निःचल भया,
पाँच जहूद‡ तन ठोक फूँका ॥ १ ॥
लगैगी दाह जब धाहै§ देता फिरै,
बिरह के अंग में रोवता है ।
पलक आँझू|| झरै ध्यान बिरहन धरै,
प्रेम रस रीत तन धोवता है ॥ २ ॥
हाड़ तन चाम गूदा असत¶ गलत है,
उड़ैगा गात तन रुई रंगा** ।
पिंड तन पीत†† उदीत‡‡ बैराग है,
देत है मह्ह ज्यूँ कूक§§ बंगा|||| ॥ ३ ॥
हंस परमहंस सरबंग से जा मिला,
बिरह बियोग यह जोग जोगी ।
दास गरीब जहँ पास प्याले फिरैं,
पीवते सहो रस भोग भोगी ॥ ४ ॥

---

*बिरही की छाती में गूदा बाक़ी नहीं रहता और पिंजर जर-जर होकर हाड़ सूख जाता है [बीझना=खुंदजाना । अस्थि=हाड़] †डोरी । ‡पंच दूत अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जला दिया । §दोहाई । ||आँसू । ¶अस्थि, हाड़ । **समान । ††पीला । ‡‡उदित=प्रकाशमान । §§चीख । ||||बाँस की पोर–जिस तरह हवा का झोंका लगने से बाँस चीखता है ।

( १ )

दीद बर दीद परतीत परतच्छ है,
नयन के नाद में गरक* होई ।
अजब गलतान कुरबान इक तन्त† है,
सब्द अतीत कूँ परख लोई ॥ १ ॥
जस पानी के बीच में बुदबुदा होत है,
फिर पानी के बीच पानी समाया ।
तस ब्रह्म दरियाव में अद्भुत ख्याल है,
कोइ पारखी संत की दृष्ट आया ॥ २ ॥
सब्द टकसाल की लहर छानी‡ नहीं,
जस दीप दरवंत§ भोडल|| घरीता¶ ।
संत सूभर** भरैं तन्त मस्तक धरैं,
हद्द का जीव सब सकल रीता†† ॥ ३ ॥
जस तिल्ली में तेल है काठ में अगिन है,
दूध में घिर्त्त मथ काढ़ लीया ।
सोई नर साध अगाध निःचल भये,
नूर प्याला जिन्हों जान पीया ॥ ४ ॥
नाभि के कमल पर बुर्द‡‡ बाजी रची,
सुरत औ निरत का नाहिं मेला ।
मेरु डंड मैदान पर कला§§ सन्मुख करै,
सो जानता होय नट भगल|||| खेला ॥ ५ ॥

*डूबना । †तत्व । ‡छिपी । §दिखाई देता है । ||अबरक । ¶धरने से ।
**शुभ्र=स्वेत, निर्मल । ††खाली । ‡‡आधी । §§करतब । ||||झूठा ।

बंक बाजीगरी बिषम सा खेल है,
  नूर प्याले पिवै पैठ सैभै* ।
लाख बानी पढ़ै ध्यान सुन में धरै,
  महल का मरहमी भेद बेधै† ॥ ६ ॥
अजगैब‡ के कोट में चोट लागै नहीं,
  सब्द अतीत में नेस§ होई ।
दास गरीब गुर-भेद से पाइये,
  अगमपुर धाम की बाट जोई ॥ ७ ॥

( ४ )

घट घट में नाद उच्चार बानी,
  मिहीं‖ महल में मारफत¶ पावता है ।
ताल मिरदंग जहँ संख सुर पूरिये**,
  बिना मुख नाद बजावता है ॥ १ ॥
तूर तुतकार धुमार†† तिस नगर में,
  अजब गुलजार इक नूर चंपा ।
कोकिला बैन सुख चैन सुनते भये,
  बिधा‡‡ है हंस लै बिरह कंपा§§ ॥ २ ॥
आद अरु अंत इक मद्ध मेला भया,
  सिखर की सुन्न में जिकर‖‖ लागी ।
केतकी कमल जहँ अजब बाड़ी बनी,
  भँवर गुंजार निःतन्त¶¶ रागी ॥ ३ ॥

---

*सहज में। †पावै। ‡अज़ग़ैब=छिपा हुआ। §निछ्छर। ‖झीना। ¶गुरज्ञान। **भरिये। ††धूम। ‡‡बिद गया। §§चिड़िया फँसाने की कल। ‖‖जाप। ¶¶निःतत्त।

दुलहनी दंग दुलहा भई देख कर,
संख रबि झिलमिले नूर जोती।
अजब दरियाव जहँ कोट बेड़े पड़े,
चुगत है हंस बिन चंच* मोती ॥ ४ ॥
जहँ गुमठ अनूप इक सेत छत्तर बना,
गगन गुलजार जहँ नूर गादो।
दास गरीब दिल दूसरा दूर कर,
सब्द अतीत सुन में समाधो ॥ ५ ॥

( ५ )

देव ही नहीं तौ सेव किस की करूँ,
किसे पूजूँ कोई नाहिं दूजा।
करता ही नहीं तौ किरत† किस की करूँ,
पिंड ब्रह्मंड में एक सूझा ॥ १ ॥
जागा ही नहीं तौ जाग किस कूँ कहूं,
सोता ही नहीं किस कूँ जगाऊँ।
खोया ही नहीं तौ खोज किसका करूँ,
बिछुड़ा नहीं किसे ढूँढ लाऊँ ॥ २ ॥
बोलता संग और डोलता है नहीं,
कला के कोट (अलख) छिप रहा प्यारा।
गैब से आया और गैब छिप जायगा,
गैब ही गैब रचिया पसारा ॥ ३ ॥
प्रान कूँ सोध कर मूल कूँ दर गहो,
बेद के धुंध‡ से अलख न्यारा।

*चोंच। †कीर्त्ति। ‡अँधेरा।

वेद कुरान कूँ छाँड़ दे बावरे,
  नूर ही नूर करले जुहारा ॥ ४ ॥
करमना भरमना छाँड़ दे बावरे,
  छाँड़ सब बरत इक बैठ ठाहीं ।
दास गरीब परतीत ही तँ कहै,
  ब्रह्मंड की जोत इस पिंड माहीं ॥ ५ ॥

## ॥ झूलना ॥

( १ )

चढ़ो नाम की नाव जहाज भइया,
  तेरा पार चलन कूँ जो दिल है जी ।
अजब कहर मैं नाव लागी,
  जहँ मन मलाह जाजुल* है जी ॥१॥
चप्पे† चित लावो बरदवान‡ बाँधो,
  बड़ा पंथ के बीच कूल§ है जी ।
जहँ भँवर भारी नाव डिगमिगै है,
  ठेका खावे गहि गलहरी|| जी ॥२॥
सूवा बोलता खाक के पिंजरे में,
  सुरत सिंध मेला बुलबुल है जी ।
चिदानन्द चीन्हो ब्रह्म गाजता है,
  जैसे मधुकर बासना फूल है जी ॥६॥

---

*जुलमी । नाव का पानी उलचना । ‡पाल । §खाड़ी । ||गलही, नाव का माथा ।

कहै दास गरीब दलाल सोई,
सौदा नाम कीन्हा सम तुल है जो ॥४॥

(२)

बंदी-छोड़ साहब का नाम लीजै,
कटै फंद सब अंध नहिँ चीन्हता है।
देई* धाम कूँ पूज कर मगन होई,
देखो सब्द की नहीं यकीनता† है ॥१॥
भेदी भेद दीन्हा सब्द महल का रे,
सीढ़ी सुन्न में लायकर पैठ धाये।
मारा मोरचा पहलई मोह का जी,
बही‡ ज्ञान तरवार सिर काट लाये ॥२॥
चढ़े सील संतोष बिबेक बंका,§
जहँ काम दल कटक‖ सब फूक दीन्हे।
जब दया के चौतरे चार आये,
अनुराग निःतन्त निर्बान चीन्हे ॥३॥
आँखी मार¶ मैदान गढ़ कोट ढाया,
सफर जंग की राड़** है खेत भाई।
दुरजन मार कर गगन में नाद बाजा,
देख दीद बरदीद परतीत आई ॥४॥
चित चौतरे बैठ कर बाँधिया जी,
हम लोक परलोक कूँ गमन कीन्हा।

---

*देबी। †बिश्वास। ‡बली। § शूरबीर। ‖फ़ौज। ¶पलक भाँजते।
**लड़ाई।

उलटी चाल चाले नहिं चूके हैं जी,
  निरालंब निरधान निःतन्त चीन्हा ॥५॥
गैबी गैब दरियाव में मार गोता,
  जैसे मीन का खोज नहिं पावता है।
कहै दास गरीब दरहाल धारा,
  परबी प्रेम की बेग नहवावता है ॥६॥

( ३ )

बंदी-छोड़ साहब का ध्यान धरो,
  निरलंब निज नूर निज नेक है जी।
जल थल में थीर गंभीर गैबी,
  देखो लोक परलोक में एक है जी ॥१॥
धर ध्यान दुरबीन यकीन कीजै,
  दिल देहरे बैठकर परख भाई।
कुरबान करतार के सेहरे पर,
  जहँ सुरत औ निरत दो निरख आई ॥२॥
अलह नूर मौला मगन आप है जी,
  गलतान सुबहान* सही देख लीजै।
बैठा अरस† के तखत पर आप साँईं,
  दीदार के वास्ते सीस दीजै ॥३॥
देख दीदार दरहाल दरिया,
  जाके मुकट पर संख रबि झिलमिलै जी।
जोती जगमगै जोग बिजोग बानी,
  जाकी खलक में पलक जहान है जी ॥४॥

*पाक (खुदा)। †अर्श।

नहिं दीखता मुगध* दृष्टि आवै,
संत खोज लिया कलधूत† है जी ।
सुन्न सैल कर सिंध में सुरत पैठी,
जहँ आप अवगत अनभूत है जी ॥५॥
मनी मार कर छत्र कूँ फेर भइया,
होय अदल अवधूत इस भेद हाजी‡ ।
अलह बैठ कर आप इन्साफ करता,
चित चौतरे चूक नहिं भई काजी ॥६॥
पड़ै गैब की मार सुमार नाहीं,
देखो कुफर कूँ कुफर दिखावता है ।
फजल सिर फजल जहँ होय भइया,
जाके एक नहिं पलकी लावता है ॥ ७ ॥
सुन्न सिखर के महल में दिया डेरा,
चैाक चाँदनी बिच नहिं पला§ पकड़ै ।
कुफर कूं मार पैमाल नीचा करै,
लालखाँ‖ बाँध कर जहाँ जकड़ै ॥ ८ ॥
मलागिर की सेज सूली नजर आवती,
मिले सुलतान कूँ कुफर तोड़ा ।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले,
सुरत और निरत का तार जोड़ा ॥ ९ ॥

( ४ )

बंदी-छोड़ साहब कूँ चीन्ह भइया,
मारो नूर के सिंध में गैब गोता ।

*गँवार । †सोना । ‡जिसने हज्ज किया है । §पल्ला । ‖मन ।

बिन पंख पंखी उड़ै भँवर सुन मैं चढ़ै,
अछै बृच्छ मैं बैठ निज सुन तोता ॥ १ ॥
दया की दाल और नाम चोखा* चुगै,
सत्त गुरदत्त बानी बिलासा ।
प्रेम के पींजरे बीच बैठा रहै,
करम खिड़की दई तोड़ फाँसा ॥ २ ॥
इक पींजरे पास मंजार† बैठा रहै,
खोज कर खोज कर खोज खोजी ।
कौन से भेद से अरस झूलत रहै,
चुगै मत चुगा यह ऋद्धु‡ रोगी ॥ ३ ॥
सुन्न के ताक§ मैं पाँच परपंच हैं,
तीन के भवन पर गमन कीजे ।
खड़ा मंजार सिर पीट रोवै सदा,
उड़ै आकास बृच्छ अछै लीजे ॥ ४ ॥
प्रेम बानी पढ़ै नाम निःचै रटै,
चंद चकोर ज्यूँ ध्यान ध्यानी ।
दास गरीब यह खेल जो याद है,
तौ पींजरा छोड़ नहिं ब्रह्म ज्ञानी ॥ ५ ॥

( ५ )

बंदी-छोड़ साहब कूँ देख भइया,
तेरे नैन में बैन बिलास बानी ।

*चावल । †बिल्ली । ‡यह ऋद्धि अर्थात बिभूति रोग रूप है । §आला ।

कच्छ कुरम जिन धौल धरनी धरे,
लोक परलोक इक सब्द ठानी ॥ १ ॥
सूछम सा रूप बिस्तार एता किया,
आदि अरु अंत मध नाहिं है रे ।
स्रिष्ट का करता तो स्रिष्ट मैं रम रहा,
नैन के बीच मैं सही है रे ॥ २ ॥
गुलबास निवास जो पुहुप गँध झीन है,
मुग्ध की दृष्ट मैं नाहिं आवै ।
सुरत की सैल से निरत आगे चलै,
बिना आकार का भेद पावै ॥ ३ ॥
पिंड ब्रह्मंड से सिंध न्यारी कहूं,
तिर्कुटी भिर्कुटी नाहिं दसमाँ ।
हद्द बेहद्द के मद्ध निज महल है,
रोसनी सेज बिन देख चसमाँ ॥ ४ ॥
रँग महल की सैर जहँ सुरत निःचल करै,
निरत कूं वार और पार पेलै ।
पिंड ब्रह्मंड का खोज पावै नहीं,
बिना आकार आकार मेलै ॥ ५ ॥
स्रवन और नैन जहँ नासिका है नहीं,
नहीं मन पवन जहँ सीस द्वारा ।
सत कमल काया नहीं खोया-पाया नहीं,
नूर जहूर अवगत हजारा ॥ ६ ॥

जहँ रहत है हंस जो सिंध सूभर* भरा,
मीन के खोज मुसूताक रहना ।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले,
समझ कर खेल नहिं भेद कहना ॥ ७ ॥

( ६ )

भली भाँत के भेद सूँ रहना यारो,
अगर दीप के धाम कूँ जाना है जी ।
चिदानंद कूँ चीन्ह दीदार पावै,
जा का तंबू बनाया असमाना है जी ॥ १ ॥
बैठा चाँदनी चैाक में यार मेरा,
अडील† परदा नहीं तासु के जी ।
बानी बोलता अमर अनुराग रागी,
जा का गावना को नहीं गा सके जी ॥ २ ॥
अरस कुरस पर पंथ है झीन मेरा,
मीन खोज की बाट लखावता हूं ।
पलक बीच में सिरे की सैर करता,
अगर दीप के धाम चलावता हूं ॥ ३ ॥
कहूं बात बैराट के घाट की जी,
ज्ञानी ज्ञान कूँ पाय कर बूड़ जाते ।
इक झिलमिली सिंध है दीप दरिया,
कोई ब्रह्म ज्ञानी जहाँ जाय न्हाते ॥ ४ ॥
बहै गंग कैलास आकास माहीं,
संभु‡ सीस पर सैल है अगम रासा§ ।

*शुभ्र=निर्मल । †बिना डील का । ‡संभु=शिव । §राशि=समूह ।

जहँ दत्त गोरख नहीं ध्यान ध्यानी,
अचल नूर ही नूर देखो तमासा ॥ ५ ॥
अरस कुरस के बाग मेँ कौन माली,
जहँ नूर जहूर के कंद* हैँ जी ।
कहै दास गरीब सँभाल भइया,
देखो चाखते नहीं सो अंध हैँ जी ॥ ६ ॥

( ७ )

खबरदार होय खेलना यार भाई,
चिदानंद की चाँदनी बीच रहना ।
पग पीठ उलटा नहीं फेरिये जी,
सब्द स्वाल के सुने से सीस देना ॥ १ ॥
कुफल जड़ी है यार महबूब मेरे,
सप्तपुरी का भेद नहिं भेदता है ।
उलट पवन द्वादस के दीप जाई,
षट कमल कूँ मूढ़ नहिं छेदता है ॥ २ ॥
ब्रह्म लोक की बात सुन रीझ जाता,
रँग रोसनी दीप नहिँ दीखता है ।
तप जोग कर भक्ति भय मान भाई,
अब साखि सब्दी कहा सीखता है ॥ ३ ॥
गुल सफा की गली मेँ नफस† कूँ गाड़दे,
मार ले मोरचा तीर तुक्का ।
सीस कूँ काट कर हाथ महबूब‡ दे,
इस्क कूँ छोड़ दे कहाँ लुक्का§ ॥ ४ ॥

*कंद मूल । †नफ्स=इच्छा । ‡प्रीतम । §छिपा ।

मन्सूर कूँ देख मौसूल यूँ हूजिये,
  अनल ही हक्क बोलै दिवाना* ।
सीस कर कटे हैँ रुधिर मुख धोवता,
  इस्क नहिं छोड़ सूली चढ़ाना ॥ ५ ॥
इस्क ही इस्क मैँ फूँक तन दिया है,
  बहे है अस्थि† दरियाव माहीँ ।
कहै दास गरीब यह इस्क साँचा सही,
  अमर मन्सूर है हक्क साँई ॥ ६ ॥

( ८ )

जल थल के बीच मैँ रम रहा तू,
  देख दीदार दर हाल है रे ।
वह सैन सुभान‡ जहान माहीँ,
  जो अजब महबूब अकाल है रे ॥ १ ॥
पारस की खान तो मुत्र की धार में,
  कहाँ मोती हीरा लाल है रे ।
गलतान असमान मैँ अजब मौला,
  इक खिष्टि तिरलोक कहा माल है रे§ ॥ २ ॥
जल बूँद सूँ जून‖ जहान सब होत है,
  इक पलक के बीच पैमाल है रे ।

---

*मनसूर फ़क़ीर अनल हक़्क़ (=हम ही खुदा हैँ) कहते थे जिन्हेँ मुसलमानोँ ने सूली चढ़ा दिया । मौसूल=भगवंत के साथ एक होजाना । †हाड़ । ‡सुबहान=पवित्र । §एक तिर्लोक की सृष्टि क्या हैसियत रखती है उस की रची हुई अनंत तिर्लोकियाँ हैँ । ‖योनि ।

पाखंड कूँ पूज पाखंड परलै गया,
  खिष्टि सूवा ठगा जाल है रे ॥ ३ ॥
पत्थर के फेल से फैज पाई नहीं,
  सीस जम दूत कासाल है रे ।
कौन मारै कहो कौन मर जात है,
  छाँड़ हंसा चला खाल* है रे ॥ ४ ॥
अगर मूल के फूल की बासना कहत हूँ,
  झिलमिली रंग रसाल है रे ।
सेत ही हंस जहँ सेत सरवर भरयो,
  सेत ही कमल जहँ ताल है रे ॥ ५ ॥
बुदबुदे संख कहँ राव और रंक है,
  नजर दर नजर निहाल है रे ।
दरियाव की लहर दरियाव लौलीन है,
  भँवर और फील जल झाल है रे ॥ ६ ॥
भर्म की बुरज सब सीत के कोट हैं†,
  अजब ख्याली रचा ख्याल है रे ।
दास गरीब वह अमर निज ब्रह्म है,
  एक ही फूल फल डाल है रे ॥ ७ ॥

## अरिल

( १ )

मौला मगन मुरारि बिसंभर चीन्ह रे ।
  दिल अंदर दीदार अरस दुरबीन रे ॥ १ ॥

* शरीर । † धुआँ का सा कोट जो जाड़े में आकाश में बन जाता है ।

इला पिंगला फेर सुखमना ध्यावही ।
त्रिकुटि झरोखै बैठि परम पद पावही ॥ २ ॥
झलकै सिंध अपार मुक्ति का धाम रे ।
अचल अगोचर देख पुरुष बरियाम* रे ॥ ३ ॥
निकट निरंजन नूर जहूर जुहारिये ।
मीनी मारग खोज सिंध यूँ फारिये ॥ ४ ॥
नैनौं ही में लाल बिसाल अलेख है ।
हरे हाँरे कहता दासगरीब रूप नहिं रेख है ॥५॥

( २ )

है मौला मस्तान मुलायम महल रे ।
चीन्हो सब्द सिताब जीवना सहल रे ॥ १ ॥
राजा रंक फकीर फना हो जायँगे ।
बिना बंदगी बाद बहुत पछतायँगे ॥ २ ॥
जनम पदारथ पाय पुरुष जाना नहीं ।
गीदी गदहा स्वान सब्द माना नहीं ॥ ३ ॥
लेखा बारंबार धरमराय लेत है ।
हरे हाँरे कहता दास गरीब कसौटी देत है ॥४॥

( ३ )

बिना मूल अस्थूल गगन मैं रम रहा ।
कोई न जाने भेव सकल सब भ्रम रहा ॥ १ ॥
अछै बृच्छ बिस्तार अपार अजोख है ।
नहीं गाम नहिं धाम भुक्त नहिं मोख है ॥ २ ॥

*श्रेष्ठ ।

छत्र सिँघासन सेत पुरुष का रूप है ।
   बरन अबरन बिचार न छाया धूप है ॥ ३ ॥
देख पद्म उँजियार परख नहिं आवही ।
   करम लिखा सो होय टरै नहिं भावही* ॥ ४ ॥
अवगत पूरन ब्रह्म परस परवान रे ।
   हरे हाँ रे कहता दास गरीब सब्द पहचान रे ॥ ५ ॥

( ४ )

सिव ब्रह्मा का राज इंद्र गिनती कहाँ ।
   चार मुक्ति बैकुंठ समझ एता लहा ॥ १ ॥
संख जुगन की जूनि† उमर बड़ धारिया ।
   जा जननी कुरबान सु कागज फारिया‡ ॥ २ ॥
एती उमर बिलंद§ मरेगा अंत रे ।
   सतगुरु लगे न कान न भेँटे संत रे ॥ ३ ॥
सौ करोड़ मँडलीक|| जु सावंत¶ संग हैँ ।
   सूरे अनंत अपार पड़े बेनंग हैँ ॥ ४ ॥
लंक सरीखा कोट चोट पैमाल है ।
   मरना है मैदान सही सिर काल है ॥ ५ ॥
रावन की रस रीत रँगीला राज था ।
   चौदह भवन बिवान मनोमई साज था ॥ ६ ॥

---

*भावी=होनहार । †योनि । ‡जिस का कर्म का लेखा चुक गया उस की जन्म देने वाली (मा) पूजने जोग्य है । §बृथा गई । ||एक देश का राजा । ¶बीर ।

इंदर बरुन कुबेर सुमेर सलामिया* ।
होय होय गये अनंत घने बहु नामिया ॥७॥
तैंतिस कोट की बंध बिथा† सुन लीजिये ।
बाँध लाया ससि भानु सजा सुर‡ दीजिये ॥८॥
एक रे जोरा काल सु कूप उसारिया§ ।
ऐसे छल बल कीन्ह सु रावन मारिया ॥९॥
फोकट राजर पाट पिटेगा अंत रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब भजो निज कंत रे ।१०

( ५ )

महमूदी चौतार हजारा‖ पहिरता ।
सुलतानी का देस बलख सा सहर था ॥ १ ॥
सोलह सहस सहेली पदमनी भोग रे ।
सतगुरु के उपदेस लिया तज जोग रे ॥ २ ॥
तुरी¶ अठारह लाख ऊँट गैवर** घना ।
सीस महल में सैल बाग नौलख बना ॥ ३ ॥
कस्तूरी तन लेप गुलाबी गंध रे ।
खाना खाते खूब परम निःचिंत रे ॥ ४ ॥
दल बादल गज ठाठ अदल तूमार रे ।
सहदाने†† सहनाई महल धूमार‡‡ रे ॥ ५ ॥
हीरे मोती मुकता जवाहिर लाल रे ।
निस दिन खूबी खैर खजाने माल रे ॥ ६ ॥

*सिर झुकाते थे । †कष्ट । ‡देवता । §लटकाया । ‖चार लड़की हज़ारा फूलों की माला । ¶घोड़ा । **हाथियों का झुंड । ††तुरही । ‡‡धूम ।

लागा बान बिहंगम सब्द सबूह रे ।
झलका* मारा ऍंच दूहबर दूह† रे ॥ ७ ॥
राज पाट गज ठाठ छाँड़ कफनी लई ।
सार सब्द की चोट तोर बख्तर गई ॥ ८ ॥
नजरी नजर निहाल जिंदा गुरु पीर था ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब तबीब‡ कबीर था ॥९

( ६ )

क्या राजा क्या रैत§ अतीत अतीम|| रे ।
जोधा गये अपार न चम्पी सीम रे ॥ १ ॥
यह दुनिया संसार बतासा खाँड़ का ।
जोरा पीवे घोर बिसरजन¶ माड़ का ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ बटाऊ लूटहीं ।
हिरस खुदी घट माँह सु बहु बिध कूटहीं ॥ ३ ॥
संसा सोग सरीर सुरसरी** बहत हैं ।
नाहीं चौदह भुवन गमन†† में रहत हैं ॥ ४ ॥
दुरमत दोजख माहिं बले‡‡ बहु भांत है ।
सतगुरु भेंटा होय तो निःचै साँत§§ है ॥ ५ ॥
आजिज जीव अनाथ परा है बंद में ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब जगत सब फंद में ॥६

*भाला । † अधकार रूपी भ्रम दूर हो गया । ‡ बैद । § रैयत । || यतीम । ¶ धोवन । ** नदी । †† थिर नहीं रहते आवागमन लगा रहता है । ‡‡ जले । §§ शांत ।

( ७ )

मरदाने मर जाहिँ मनी पर मार है ।
ऐसा महल अनूप पलक मेँ छार है ॥ १ ॥
जोरा* बुरी बलाय जीव जग भूँच† है ।
पलक पहर छिन माहिं नगारा कूँच है ॥ २ ॥
सुरत सुहंगम नेस पेस है बावरे ।
बदी बिदारो‡ बेग धनी कूँ ध्याव रे ॥ ३ ॥
दम की डोरा खोज दरीबा§ खूब है ।
अगर दीप सतलोक अजब महबूब है ॥ ४ ॥
सुता|| पुत्र गृह नार छार सब गात रे ।
का सूँ लाया नेह संग नहिँ साथ रे ॥ ५ ॥
हंस अकेला जाय हिरंबर हेत रे ।
सब्द हमारा मान नाम निज चेत रे ॥ ६ ॥
कोतल घोड़े पीनस¶ रथ संग पालकी ।
गज गैबर** दल ठाठ निसानी काल की ॥ ७ ॥
हक हलाल पहिचान बदी कर दूर रे ।
यह मुरगी रब रूह गऊ क्या सूर†† रे॥ ८ ॥
तीतर चिड़ी बटेर भखे हलवान रे ।
मुल्ला बाँग पुकार अल्लह रहमान रे ॥ ९ ॥
रमजानी रमजान घास चोखा दिया ।
पकड़ पछाड़ी रूह कहो यह क्या किया॥ १० ॥

*जुल्म । †गँवार । ‡फाड़ डालो, नाश करो । §झोपड़ा । ||बेटी । ¶एक तरह की छोटी पालकी । **हाथियों का झुंड । ††सूअर ।

खूनी खून मँझार खाल क्यूँ काढ़ता ।
देखे रब रहमान गला क्यूँ बाढ़ता* ॥ ११ ॥
ऐसे बूड़े नाव होत हैं गरक रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब नाम निज परख रे १२

( ८ )

जानै जाननहार सकल की जानता ।
घट घट मैं अबिनासी पूरन प्रान था ॥ १ ॥
अवगत भिन्न अभिन्न महल मैं महल है ।
हाजिर नाजिर देख कहो क्या गहल† है ॥२॥
अलख पलक के बीच अकासा ईस रे ।
सुरत निसानै लाय देख जगदीस रे ॥ ३ ॥
सेत बरन सुभ रंग बिरंग बिचार रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब देख दीदार रे ॥४॥

( ९ )

हिरदय कपट कमाल लाल पावै नहीं ।
बहुत परिस्रम भूल गाँठ गहिरी गही ॥ १ ॥
मरजीवा‡ मन मारि महोदध§ पैठ रे ।
अनहद सब्द घमोर‖ जहाँ टुक बैठ रे ॥ २ ॥
त्रिकुटी कमल पर सिंध सरोवर सुन्न रे ।
छूट हाथि गढ़ छाँड़ तहाँ रख मन्न रे ॥ ३ ॥
लगै कोट पर चोट अकार पसार है ।
उपजे सेती भिन्न जो बस्तु नियार है ॥ ४ ॥

---

*काटता । †ग़फ़लत । ‡समुद्र मैं मोती की खोज मैं गोता लगाने वाला । §समुद्र । ‖घनघोर ।

अलख अलेल पदम सदन* जहँ लाइये ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब रहत† घर पाइये ॥५॥

(१०)

नग सरवर पर तरवर‡ साखा नहिं मूल रे ।
अछै बृच्छ अस्थान जहाँ मन फूल रे ॥ १ ॥
पीघू§ अनन्त अपार पड़े तिस धाम रे ।
तत-बेता परम हंस बसैं निःकाम रे ॥ २ ॥
समाधान संजूत‖ सलेमाबाद रे ।
अज अमर घर देखो आद अनाद रे ॥ ३ ॥
बैकुंठ रिहिस्त बिसार नास है जात है ।
चल बसा सतलोक नबेला साथ है ॥ ४ ॥
अगर डोरहंचढ़ देख झिलमिली सुन्न रे ।
अजर अमर घर बसो पाप नहिं पुन्न रे ॥५॥
तहँ वहँ पदम अनन्त परेवा¶ जाहिंगे ।
अछै बृच्छ फल हंस तहाँ वहँ खाहिंगे ॥ ६ ॥
अमर भूमि अस्थान प्रान जहँ चाल रे ।
अनंत कोटि तहाँ सिद्ध अमीते** माल रे ॥७॥
अवगतपुर का राजा अवगत नाम है ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हमारा गाम है ॥८॥

---

*घर । †रहित=मोक्ष । ‡पेड़ । §पैगू—पन्ना की क़िस्म का एक जवाहिर । ‖संयुक्त । ¶कबूतर अर्थात् जीव । **बेहिसाब ।

(११)

यह सौदा सतभाय* करो परभात रे।
तन मन रतन अमोल† बटाऊ‡ साथ रे ॥ १ ॥
बिछुर जायँगे मीत मता सुन लीजिये।
बहुर न मेला होय कहो क्या कीजिये ॥ २ ॥
सील संतोष बिबेक दया के धाम हैं।
ज्ञान रतन गुलजार सँघाती राम हैं ॥ ३ ॥
धरम धजा फरकंत फरहरैं लोक रे।
ता मध अजपा नाम सु सौदा रोक‡ रे ॥ ४ ॥
चलै बनिजवा§ ऊठ|| हूंठ गढ़ छाँड़ रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब लगै जम डाँड़ रे ॥५॥

(१२)

जम जोरा का जाल काल खग¶ सीस रे।
हैफ** होत छिन माहिं सुमिर जगदीस रे ॥१॥
ऐसा साज बनाय बिसर नहिं जाइये।
जनम पदारथ खोय बहुर कहँ पाइये ॥ २ ॥
जम जोरा का जोर कठोर बिजोग है।
सर्ब लोक सिर साल सु दीरघ रोग है ॥ ३ ॥
जो जाने तो जान सब्द कूँ मान रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब होत है हान रे ॥४॥

---

*सत्त भाव। †ठग। ‡नक़द दाम से लेना। §बंजारा, प्राण। ||उठना। ¶चिड़िया। **अफ़सोस।

( १३ )

सावँत* औ मँडलीक† गये बहु सूर रे ।
राजा रंक अपार मिले सब धूर रे ॥ १ ॥
रुई लपेटी आग अँगीठी आठ रे ।
कोतवाल घट माहिं मारता काठ‡ रे ॥ २ ॥
नरक बहै नौ द्वार देहरा गंद रे ।
क्या देखा कलि माहिँ पड़ा क्यूँ फंद रे ॥ ४ ॥
हासिल§ का घर दूर हजूर न चालता ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हटी‖ में लाल था॥५॥

( १४ )

हाट पटन बाजार वजन¶ फीका पड़ा ।
जम किंकर का तौक आन गल मेँ पड़ा ॥ १ ॥
मार मुहँ मुह खाय सीस धर पीटहीं ।
जम रोकै नौ द्वार गला और घीट** हीं ॥२॥
रंचक स्वाद सरीर सिंघासन सेज रे ।
पड़ी जुगन जुग भूल न छाँड़े हेज†† रे ॥ ३ ॥
जैसे मधु की माखी मधुवा‡‡ भोग रे ।
छार§§ दई मुख माहिं लूटि हैं लोग रे ॥ ४ ॥

---

*बीर । †एक मंडल का राजा । ‡चोर को हवालात रखने के लिये लकड़ी में छेद करके उस में पाँव डाल कर कील से ठोंक देते हैं । §लाभ, तत्व बस्तु । ‖हाट=दूकान । ¶तौल । **घंटी, घाँटी । ††प्यार । ‡‡जैसे मधु-मक्खी शहद इकट्ठा करती है पर उसे खाने नहीं पाती उसका मज़ा मधुवा चिड़िया या शहद निकालने वाले लूटते हैं । §§राख, धूल ।

ऐसा संग्रह कीन्ह संग ना चालिहै ।
हर दम अजपा नाम जपो यह माल है ॥ ५ ॥
दौरा* दूत न चोर तिसै नहिं लूटि हैं ।
जूनी संकट बंध नाम से छूटि हैं ॥ ६ ॥
उर मैं आसन मार खजाना खूब है ।
जप तप कौने काम बेचना दूब† है ॥ ७ ॥
लालोँ के ब्योपार पलक टुक मूँद रे ।
खैरचटा मत खाह अज्ञानी गूँद‡ रे ॥ ८ ॥
काँटे कुटिल करीर§ सरीर झरोरिहै|| ।
चल सतगुरु के देस जु पदम करोर है ॥ ९ ॥
सूली सेज सुरंग तुरंग नचावते ।
जिन के नाम न गाम कहीं नहिं पावते ॥१०॥
मरना है महबूब हक्क दर हक्क रे ।
नजर करो निरतावो¶ पदम परक्ख रे ॥ ११ ॥
सुजनी सेज बिछाय के चँवर ढुरावते ।
जा घर रवनी रंभा** रागी गावते ॥ १२ ॥
सून महल अरु मंदिर बासे काग रे ।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब जगत निरभाग††रे१३

( १५ )

खलक मुलक कूँ देख सँघाती कोउ नहीं ।
जम का है मुख्तार सीस बैठे वहीं ॥१॥

---

*धावा मार कर चोरी करने वाले । †बाहरी जप तप घास का बेचना है । ‡गैंद । §एक काँटेदार पेड़ । ||छिलोर लगा देगा । ¶बिचार और निर्णय करो । **सुंदर बेश्या । ††अभागा ।

होगा हाल बिहाल सब्द कूं सोध रे ।
पुत्र बिसारा माता बालक गोद रे ॥२॥
और सहेली आन सैन बतलाइया ।
कंठ धुकधुकी आन यान* समझाइया ॥ ३ ॥
ऐसे मौला† खोया महल के माहिं रे ।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब वृच्छ मध छाँह रे॥४॥

( १६ )

न्यारा कभी न होय निरंजन देह से ।
रहा सकल घट पूर परम सुख नेह से ॥ १ ॥
ज्यूँ दरिया मध लीन मीन मग जोह रे ।
पंछी पैर अकास खोज‡ नहिं होय रे ॥ २ ॥
बिन पंखों के भौंरा उड़े अकास कूँ ।
इला पिंगला सुखमन सोधे स्वास कूँ ॥ ३ ॥
गूँगे ने गुड़ खाया कैसे जानिये ।
सैन सुकृत से पावै बचन पिछानिये ॥ ४ ॥
काली पीली सुरही§ धौली धेनु रे ।
सेत बरन सब दूध सकल इक बैन रे ॥ ५ ॥
नहीं ऊँच नहिं नीच निरंजन जाति रे ।
करता के सब माहिं दिवस औ रात रे ॥ ६ ॥
सोहं साछीभूत न ईसर कोय रे ।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब धनी कूँ जोह रे॥ ७ ॥

*कूँच । †ईश्वर ‡निशान । §गाय ।

# बैत

बंदे जान साहब मार वे ।
पिदर[*] मादर[†] आप कादर[‡], नहीं कुल परिवार वे ॥१॥
जल बूँद से जिन साज साजा, लहमा[§] दरिया नूर वे ।
है सकल सरबंग साहब, देख निकट न दूर वे ॥ २ ॥
जिन्द[||] अजूनी बेनमूनी, जागता गुरु पीर वे ।
उलट पहुन मेरु चढना, लहम दरिया तीर वे ॥ ३ ॥
अजब साहब है सुभानं, खोज दम का कौन वे ।
तिर्कुटी के घाट चढ़ कर, ध्यान धर दुरबीन वे ॥४॥
अजब दरिया है हिरंबर[¶], परम हंस पिछान वे ।
आब खाक न बाद आतिस[**], ना जमीं असमान वे ॥५॥
अलख आप अलाह साहब, कुर्स कुंज जहूर वे ।
अर्स ऊपर महल मालिक, दर झिलमिला नूर वे ॥६॥
मौला करीम खुदाय खूबी, धुन सोहंसा जाप वे ।
बाँग रोज निमाज कलमा, है सबद गरगाप वे ॥७॥
निर्भय निहंगम[††] नाद बाजै, निरख कर टुक देख वे ।
अरसी अजूनी जिंद जोगी, अलख आदि अलेख वे ॥ ८ ॥
मढ़ी महल न तासु के, आसन अचंभी ऐन वे ।
पाजी गुलाम गरीब तेरा, देखता सुख चैन वे ॥ ९ ॥

---

*बाप । †मा । ‡शक्तिमान । §छिन में । ||ज़िन्दा, जीता जागता ।
¶निर्मल । **पानी, मिट्टी, हवा, आग । ††निःअहंकार, मतवाला ।

( २ )

बंदे खोज पैंडा पकर वे ।
लेखा सरे[*] मैं लीजियेगा, कर धनी का जिकर वे ॥१॥
जिकर फिकर फरियाद कर ले, अंदरूनो अरस वे ।
हाली मवाली[†] याद कीजे, ना सरे मैं तरस वे ॥ २ ॥
रसना रँगीली राम जप ले, अलख कादिर आप वे ।
पीराँ फकीराँ परस ले, पूजो सनेही साध वे ॥ ३ ॥
दरगह मिटै जो डंड तेरा, नेकी निरंतर राख वे ।
नापैद से पैदा किया, तूँ नाम बिन नापाक वे ॥४॥
दिल सफा कर सैलान कीजै, बंक मारग बाट वे ।
इला पिंगला सुषमना, तूँ उतर औघट घाट वे ॥५॥
बंक नाल बिसाल बहना, है अमी रस अरस वे ।
रसना बिहूना[‡] राग गावे, बिना चसमौं दरस वे ॥६॥
प्याला अमी रस पीजिये, खुलिहै बजर कपाट वे ।
अरस कुरस अबंध अवगत, कोल्हू चवै बिन लाट[§] वे ॥७॥
निरभै निरन्तर नेम रख, अकला[||] अनाहद रात वे ।
मुकता मुलायम याद साहब, दूर कर दिल घात वे ॥८॥
जोगी बिजोगी बिंद रख[¶], सुन में समाना सिंध वे ।
हाजिर गुलाम गरीब है, सोलह कला रवि चंद वे ॥९॥

( ३ )

बंदे देख ले दरहाल वे ।
सुन्न मंडल सैल करले, अजब गैबी ख्याल वे ॥ १ ॥

[*]दरबार (अरअ?)। [†]दर्बारी, प्रेमीजन। [‡]बिना। [§]बिना लाठ के कोल्हू टपकता है। [||]अँधेरी। [¶]जो वीर्य्य को पात न होने दे।

जबरूत* पर नासूत* है, नासूत पर मलकूत* वे ।
मलकूत पर लाहूत* है, लाहूत पर अनभूत* वे ॥ २ ॥
सुन ले सोहंसो जाप कूँ, सुन में सिलहरा बाँध वे ।
सेस के सिर ध्यान धरिये, उलट स्वर कूँ साध वे ॥३॥
तीन मूरत निरख निःचल, पैठ देख पताल वे ।
मूल चक्र गनेस गैबा, रंग रूप बिसाल वे ॥ ४ ॥
दंड-धारी भुजा भारी, मुकट की छबि खूब वे ।
अगमी अनाहद अदल है, फजली फजल महबूब वे ॥५॥
टुक उलट चसमैँ सिंध में, झलकै जलाबिंब† जोर वे ।
अजब रास बिलास बानी, चंद सूर करोर वे ॥६॥
हलका न भारा है मुरारी, अजब नूरी नैन वे ।
दिल मगज अंदर महल है, तूँ समझ ले यह सैन वे ॥७॥
इक गुमठ‡ अटल अनाद है, ढुरते सुहंगम चौंर वे ।
सेत छत्तर सीस सोहै, अजब उज्जल भौंर वे ॥८॥
अजब नूर जहूर जोती, झिलमिलै झलकंत वे ।
हाजिर गुलाम गरीब है, जहँ देख आदि न अंत वे ॥९॥

( ४ )

बंदे देखले दुरबीन वे ।
अनक उघार बिकार खोलो, चलै जल बिन मीन वे ॥१॥
बिना जल जहँ मीन चलता, नाम नौका अधर वे ।
बेड़े बिमान अमान देखो, को लखै यह कदर वे ॥२॥

*अंतरी मुकामों के नाम । †जल में परछाईं । ‡गुम्बज़ ।

पानी बिना सरवर सरू*, जहं फूल है गुलजार वे।
अधर बाग अनंत फल, कायम कला करतार वे ॥३॥
कर निगाह अगाह आसन, बरसता बिन बद्र†वे।
बिन पखावज ताल सुर, बाजे बजैं जहं मधुर वे ॥४॥
बानी बिनोद असोधपुर, चंदा नहीं जहाँ सूर वे ।
पानी पवन नहिं भवन भारी, कला संख सपूर वे ॥५॥
कायम कुफल कुंजी लगी, खोले सोई सत पोर वे।
कहता गरीब तबीब, तन चंगा करत कबीर वे ॥६॥

( ५ )

बंदे देखले निज मूल वे।
कला कोटि असंख धारा, अधर निरगुन फूल वे ॥१॥
है अबंच असंच अबगत, अधर आदि अनाद वे ।
कमल मोती जगमगै, जहं सुरत निरत समाध वे॥२॥
भवन भारी रवन सोभा, भजो राम रहीम वे ।
साहब धनी कूँ याद कर, जप अलह अलख करीम वे ॥३
मादर पिदर है संग तेरे, बिछुरता नहिं पलक वे ।
कायम कला कुरबान जाँ, खालिक बसे है खलक वे ॥४॥
खालिक धनी है खलक में, तूं फलक पलक समोय वे।
अरस आसन है बिहंगम, अधर चसमे जोय वे ॥५॥
बैराट में इक घाट है, उस घाट में इक द्वार वे ।
उस द्वार में इक देहरा, जहं खूब है इक यार वे ॥६॥
सूभ‡ है दिलदार साहब, देखना नहिं भूल वे ।
गरीबदास निवास नग§ पर, भई सेजाँ सूल वे ॥७॥

*सर्व का पेड़। †बादल। ‡प्रकाशमान। §ऊँचा स्थान।

( ६ )

बंदे अधर बेड़ा चलत वे ।
साँच मान सुगंद[*] साहब, नहीं करिया लगत वे॥१॥
अधर पुहमी अधर गिरवर, अधर सरवर ताल वे ।
अधर नदियाँ बहत हैं जहँ, अधर हीरे लाल वे॥२॥
अधर नौका अधर खेवट, अधर पानी पवन वे ।
अधर चंदा अधर सूरज, अधर चौदह भुवन वे॥३॥
अधर बागं अधर बेलं, अधर कूप तलाव वे ।
अधर माली कुहकता है, अधर फूल खिलाव वे ॥४॥
अधर बँगला अधर डेवढ़ी, अधर साहब आप वे ।
अधर पुर गढ़ हूंठ नगरी, नाभि नासा माथ वे ॥५॥
हूंठ हाथ हजूर हासिल, अधर पर इक अधर वे ।
गरीबदासं अधर ध्यानी, ओढ़ि एकै चदर[†] वे ॥६॥

( ७ )

बंदे पाक नाम पिछान वे ।
पाक मेला पाक परबी, पाक है असनान वे ॥१॥
पाक सेवा पाक पूजा, पाक सालिग्राम वे ।
पाक चंदन पाक अरचन, पाक है वह धाम वे ॥२॥
पाक संखा पाक झालर[‡], पाक है वो तूर[§] वे ।
पाक बीना पाक घंटा, पाक यारा नूर वे ॥३॥
पाक सिज्जा[‖] पाक आसन, पाक है वह तख्त वे ।
पाकै पुजारी पूजता, जो पाक है सब रख्त[¶] वे ॥४॥

[*] क़सम । [†] चोला, शरीर । [‡] झाँझ । [§] तुरही । [‖] पलंग । [¶] सामान ।

पाक कुरसी पाक तुरसी, पाक माला फेर वे ।
पाक रागी पाक गावै, पाक नाद भेर वे ॥५॥
पाक भौंरा पाक चौंरा, पाक पुसुप गंध वे ।
पाक मोती पाक हंसा, पाक सरवर सिंध वे ॥६॥
पाक लहरा पाक मिहरा, पाक सूरज चंद वे ।
पाक सस्तर पाक बस्तर पाक पुर आनंद वे ॥७॥
पाक बानी पाक प्रानी, पाक बोलनहार वे ।
गरीबदास पाक होकर, पाक कर दीदार वे ॥८॥

---

## रमैनी

जब लग हंसा हमरी आना ।
तब लग लगै न तुमरा बाना ॥ १ ॥
दोहा दे गुरु भरैं हंकारा ।
तिन हंसों का चढ़ू पुकारा ॥ २ ॥
कोटि कटक करहूं पमाला ।
जम किंकर का तोड़ूँ जाला ॥ ३ ॥
चौदह कोट बाँध जम लाऊँ ।
धरमराय कूँ त्रास दिखाऊँ ॥ ४ ॥
चौदह भुवन दुहाई गाजै ।
जिस कूँ सुन जम किंकर भाजै ॥ ५ ॥
भक्ति बीज जो होवै हंसा ।
कोटिन जीव उधारै बंसा ॥ ६ ॥

*तुलसी । †शहनाई । +धर्मराय से कह रहे । हैं ।गुरु की दोहाई देकर हाँक मारैं ।

॥ साखी ॥

उधरैं हंस पार हो जाहीं ।
भवसागर मैं बहुर न आहीं ॥ ७ ॥
सब्द हमारा मानि है, जाके हिरदय हेत ।
अमर लोक पहुंचावहूं, रूप धरत है सेत ॥८॥
कहैं कबीर सुनो धर्मराया ।
हम संखौं हंसा पद परसाया ॥ ९ ॥
जिन लीन्हा हमरा परवाना ।
सो हंसा हम किये अमाना ॥ १० ॥
अमृत पान अमी रस चोखा ।
पीवो हंसा नाहीं धोखा ॥ ११ ॥
या रस की जो लगै खुमारी ।
गगन मँडल मैं सुन्न अधारी ॥ १२ ॥
झरै अमी रस अमृत धारा ।
जानैगा कोइ पीवनहारा ॥ १३ ॥
हंस परेवा† अमृत पीवै ।
संखौं कल्प जुगै जुग जीवै ॥ १४ ॥
टूटे बंधन होत खुलासा ।
गरीबदास पद हंस निवासा ॥ १५ ॥

( २ )

सेत सिंघासन सेतहि अंगा ।
सेत छत्र जाको सेतहि रंगा ॥ १ ॥

*निश्चिन्त । †कबूतर ।

सेत खवास सेत ही चौँरा ।
सेतै पुहुप सेत ही भौंरा ॥ २ ॥
सेतै नाद सेत ही तूरा ।
सेत सिँघासन नाचै हूरा* ॥ ३ ॥
सेतै नदी सेत ही बिरछा ।
सेतै चंदन मस्तक चरचा† ॥ ४ ॥
सेत सरोवर सेतहि हंसा ।
सेतै जाका सब कुल बंसा ॥ ५ ॥
सेतै मंदिर चंदर जोती ।
सेतै मानिक मुक्ता मोती ॥ ६ ॥
सेतै मुकुट सेत ही थाना ।
सेत धुजा औ सेत निसाना ॥ ७ ॥
गरीबदास वह धाम हमारा ।
सुर नर मुनि जन करो बिचारा ॥ ८ ॥

( ३ )

बिनहीं पंथ पंथ है भाई ।
बिन चरनौं चालै सो जाई ॥ १ ॥
बिनहीं देह धरै जह ध्याना
देह न गेह‡ न पिंड न प्राना ॥ २ ॥
पिंड ब्रह्मंड बाक नहिं बानी ।
मन बुधि सेती अगम निसानी ॥ ३ ॥
अलिफ इलाम§ गाम नहिं गेहा ।
गगन मँडल में जुरा सनेहा ॥ ४ ॥

*अप्सरा । †लगाया । ‡घर । §अल्लाह में अलिफ़ और लाम दो हर्फ़ हैं—अलाम के अर्थ सर्वज्ञ के भी हैं ।

एता इलम* जो दिखलावै ।
सो सतगुरु साँचा कहलावै ॥ ५ ॥
गरीबदास मन धरै न धीरं ।
अधर धार पंथ बाट कबीरं ॥ ६ ॥

( ४ )

रूप न रेख भेष नहिं बाना ।
आसन असल लना† अस्थाना ॥ १ ॥
अकल अभूनी‡ गम नहिं मोरी ।
हे सतगुरु कहँ पाऊँ डोरी ॥ २ ॥
ऊँचा धाम गाम नहिं कोई ।
बिना चरन जहँ चलना होई ॥ ३ ॥
अचरज लीला अगम अपारा ।
कैसे पाऊँ पंथ तुम्हारा ॥ ४ ॥
सुरत निरत का सार सनेसा§ ।
उतरै हंसा पार हमेसा ॥ ५ ॥
कहै कबीर पुरुष बरियामं‖ ।
गरीबदास इक नौका नामं ॥ ६ ॥

( ५ )

आदि सनातन पंथ हमारा ।
जानत नाहीं यह संसारा ॥ १ ॥
पंथों सेती पंथ अलहदा ।
भेखौं बीच पड़ा है बहदा¶ ॥ २ ॥

*विद्या । †लामकान । ‡तुच्छ बुद्धि । §सँदेसा । ‖श्रेष्ठ । ¶वाद विवाद ।

षट दरसन सब खटपट होई ।
हमरा पंथ न पावै कोई ॥ ३ ॥
हिन्दू तुरक कदर नहिं जाने ।
रोजा ग्यारस करै धिक ता ने ॥ ४ ॥
दोनौं दीन यकीन न आसा ।
वे पूरब वे पछिम निवासा ॥ ५ ॥
दुहूं दीन का छोड़ा लेखा ।
उत्तर दक्खिन में हम देखा ॥ ६ ॥
गरीबदास हम निःचै जाना ।
चारो खूँट दसो दिस ध्याना ॥ ७ ॥

( ६ )

कैसे हिंदू तुरक कहाया । सबही एकै द्वारे आया ॥१॥
कैसे ब्राह्मन कैसे सूद्रं । एकै हाड़ चाम तन गूदं ॥२॥
एकै बिंद एक भग द्वारा । एकै सब घट बोलनहारा ॥३॥
कौम छतीस एकही जाती । ब्रह्मबीज सब की उतपाती ॥४॥
एकै कुल एकै परिवारा । ब्रह्मबीज का सकल पसारा ॥५॥
ऊँच नीच इस बिध है लोई । कर्म कुकर्म कहावै दोई ॥६॥
गरीबदासजिननामपिछाना। ऊँचनीचपदयेपरमाना†७।

*मुसलमान रोज़ा रखते हैं और हिन्दू एकादशी का व्रत सो दोनौं को धिक्कार है । †अर्थात सुकर्म और कुकर्म के अनुसार ।

## ॥ आरती ॥

अदली आरत अदल समोई ।
निरभय पद में मिलना होई ॥ टेक ॥
दिल का दीप पवन की बाती ।
चित का चंदन पाँचो पाती ॥ १ ॥
तत का तिलक ध्यान की धोती ।
मन की माला अजपा जोती ॥ २ ॥
नूर के दीप नूर के चौंरा ।
नूर के पुहुप नूर के भौंरा ॥ ३ ॥
नूर की झाँझ नूर की झालर* ।
नूर के संख नूर की टालर† ॥ ४ ॥
नूर की साँझी नूर की सेवा ।
नूर के सेवक नूर के देवा ॥ ५ ॥
आदि पुरुष अदली अनुरागी ।
सुन संपुट में सेवा लागी ॥ ६ ॥
खोजो कमल सुरति की डोरी ।
अगर दीप में खेलो होरी ॥ ७ ॥
निरभय पद में निरत समानी ।
दासगरीब दरस दरबानी ॥ ८ ॥

( २ )

अदली आरत अदल उजारा ।
सत्त पुरुष दीजो दीदारा ॥ टेक ॥

*बिजय घंट। †ताल। ‡रंग या फूल पत्ती की चित्रकारी जो ठाकुरजी के सामने बनाई जाती है।

कैसे कर छूटै चौरासी ।
जूनी संकट बहुत तिरासी ॥ १ ॥
जुगन जुगन हम कहते आये ।
भवसागर से जीव छुटाये ॥ २ ॥
कर बिस्वास स्वास कूँ पेखो ।
या तन मेँ मन मूरत देखो ॥ ३ ॥
स्वासा पार सु भेद हमारा ।
जो खोजे सो उतरे पारा ॥ ४ ॥
स्वासा पार सु आदि निसानी ।
जो खोजै सो होय दरबानी ॥ ५ ॥
हर दम नाम सुहंगम सोई ।
आवा गमन बहुर ना होई ॥ ६ ॥
अब तो चढ़े नाम के छाजे* ।
गगन मँडल मेँ नौबत बाजै ॥ ७ ॥
अगर अलेल सब्द सहदानी ।
दासगरीब विहंगम बानी ॥ ८ ॥

( ३ )

अदली आरत अदल बखाना ।
कोली बुनै बिहंगम ताना ॥ टेक ॥
ज्ञान का राछ† ध्यान की तुरिया ।
नाम का धागा निःचै जुरिया ॥ १ ॥
प्रेम की पान‡ कमल की खाड़ी§ ।
सुरत का सूत बुनै निज गाढ़ी ॥ २ ॥

---

*छज्जा । †एक आला कपड़ा बुनने का जो कंघी की सूरत का होता है । ‡माड़ी । §गड्ढा जिस में पैर लटका कर बैठते हैं ।

नूर की नाल* फिरै दिन राती ।
जा कोली कूँ काल न खाती ॥ ३ ॥
कल का खूँटा धरनी† गाड़ा ।
गहिर गम्भीना‡ ताना गाड़ा ॥ ४ ॥
निरत की नली बुनै जो कोई ।
सो तो कोली अविचल होई ॥ ५ ॥
रेजा§ राजिक का बुन दीजै ।
ऐसे सतगुरु साहब रीझै ॥ ६ ॥
दासगरीब सोई सत कोली ।
ताना बुनिहै अरस अमोली ॥ ७ ॥

( ४ )

अदली आरत अदल अजूनी ।
नाम बिना है काया सूनी ॥ टेक ॥
झूठी काया खाल लुहारा ।
इला पिंगला सुखमन द्वारा ॥ १ ॥
किरतघनी|| भूले नर लोई ।
जा घट निःचा नाम न होई ॥ २ ॥
सो नर कीट पतंग भुवंगा¶ ।
चौरासी में धरिहैं अंगा ॥ ३ ॥

*ढरकी । †ज़मीन । ‡गफिल । §कपड़ा । ||नाशुकरा । ¶साँप ।

उद्भिज* खानी भुगतै प्रानी ।
समझै नहीं सब्द सहदानी ॥ ४ ॥
हम हैं सब्द सब्द हम माहीं ।
हम से भिन्न और कछु नाहीं ॥ ५ ॥
पाप पुन्न दो बीज बनाया ।
सब्द भेद कोउ बिरले पाया ॥ ६ ॥
सब्दै सर्ब लोक मैं गाजै ।
सब्द वजीर सब्द है राजै ॥ ७ ॥
सब्दै स्थावर जंगम जोगी ।
दास गरीब सब्द रस भोगी ॥ ८ ॥

( ५ )

अदली आरत अदल जमाना ।
जम जोरा मेटौं तलबाना ॥ टेक ॥
धरम राय पर हमरी धाई† ।
नौबत नाम चढ़े ले भाई ॥ १ ॥
चित्रगुप्त‡ के कागज चीरौं ।
जुगन जुगन मेटौं तसकीरौं ॥ २ ॥
अदली ज्ञान अदल इक रासा§ ।
सुन कर हंसन|| पावैं त्रासा ॥ ३ ॥
इजराईल¶ जुसा बरदाना ।
धरमराय का है तलबाना ॥ ४ ॥

---

*बनस्पति । †धावा । ‡जमपुरी में कर्मों का लेखा रखने वाला देवता । §एक रस । ||जीव । ¶जान निकालने वाले फ़िरिश्ते का नाम ।

मेटौं तलब करौं तागीरा* ।
भेंटे दासगरीब कबीरा ॥ ५ ॥

( ६ )

अदली आरत अदल पठाऊँ ।
जुगन जुगन का लेखा पाऊँ ॥टेक॥

जा दिन नहिँ थे पिंड न प्राना ।
पानी पवन जिमीं असमाना ॥ १ ॥

कच्छ मच्छ कूरम नहिँ काया ।
चंद सूर नहिँ दीप बनाया ॥ २ ॥

सेस महेस गनेस न ब्रह्मा ।
नारद सारद ना बिसकर्मा ॥ ३ ॥

सिध चौरासी ना तैंतीसी ।
नौ औतार नहीं चौबीसी ॥ ४ ॥

पाँच तत्त नाहीं गुन तीना ।
नाद बिंद नाहीं घट सीना ॥ ५ ॥

चित्रगुप्त† नहिँ किर्तम बाजी ।
धरमराय नहिँ पंडित काजी ॥ ६ ॥

धुंधूकार अनंत जुग बीते ।
जा दिन कागद कोउ के चीते‡ ॥ ७ ॥

जा दिन थे हम तखत खवासा ।
तन के पाजी सेवक दासा ॥ ८ ॥

---

* तंगी । † कर्मों का लेखा रखने वाले देवता । ‡ तब तक कर्मों का हिसाब किसी का नहीं खुला था ।

संख जुगन परलूं परवाना ।
सत्तपुरुष के संग रहाना ॥ ९ ॥
दास गरीब कबीर का चेरा ।
सत्त लोक अमरापुर डेरा ॥ १० ॥

( ७ )

ऐसी आरत अपरम्पारा ।
थाके ब्रह्मा वेद उचारा ॥ टेक ॥
अनंत कोट जाके संभु ध्यानी ।
ब्रह्मा संख वेद पढ़ैं बानी ॥ १ ॥
इंद्र अनंत मेघ रस माला ।
सब्द अतीत वृद्ध नहिं बाला ॥ २ ॥
चंद सूर जाके अनंत चिरागा ।
सब्द अतीत अजब रंग बागा ॥ ३ ॥
सात समुद्र जाके अंजन नैना ।
सब्द अतीत अजब रंग बैना ॥ ४ ॥
अनंत कोट जाके बाजे बाजैं ।
पूरन ब्रह्म अमरपुर छाजैं ॥ ५ ॥
तीस कोट रामा औतारी ।
सीता संग रहंती नारी ॥ ६ ॥
तीन पदम जाके भगवाना ।
सप्त नील* कन्हवा† संग जाना ॥ ७ ॥
तीस कोट सीता संग चेरी ।
सप्त नील राधा दें फेरी ॥ ८ ॥

* नील=एक सौ खरब । † कन्हैया या कृष्ण ।